अध्याय 16.
नरकगति

1. संसारी जीवों को कितनी गतियों में विभाजित किया है ?

संसारी जीवों को चार गतियों में विभाजित किया है-नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति एवं देवगति।

2. गति किसे कहते हैं ?

जिस कर्म के उदय से जीव नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य एवं देवपने को प्राप्त होता है, उसे गति कहते हैं।

3. नरकगति किसे कहते हैं ?

1. जिस कर्म का निमित्त पाकर आत्मा नारक भाव को प्राप्त करता है, उसे नरकगति कहते हैं।
2. पापकर्मों के फलस्वरूप अनेक प्रकार के असह्य दु:खों को भोगने वाले जीव नारकी कहलाते हैं और उनकी गति को नरकगति कहते हैं।
3. जो नर अर्थात् प्राणियों को काता अर्थात् गिराता है, पीसता है, उसे नरक कहते हैं। (श्री धवला, पु. 1/24/202)
4. जो परस्पर में रत नहीं है अर्थात् प्रीति नहीं रखते हैं, उन्हें नरत कहते हैं और उनकी गति को नरकगति कहते हैं। (जीवकाण्ड, 147)

4. नरकगति का वर्णन पहले क्यों ?

नारकियों के स्वरूप का ज्ञान होने से भय उत्पन्न हो गया है, ऐसे भव्य जीव की दसलक्षण धर्म अर्थात् मुनिधर्म में निश्चल रूप से बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा समझकर पहले नरकगति का वर्णन किया है। (श्री धवला, पु. 3/15/122)

5. नारकियों की कौन-कौन सी विशेषताएँ हैं ?

1. नारकियों का शरीर अशुभ वैक्रियिक, अत्यन्त दुर्गन्ध युक्त एवं डरावना होता है।
2. शरीर का आकार बेडोल (हुण्डक संस्थान) होता है।
3. शरीर का रंग धुएँ के समान काला होता है।
4. शरीर में खून, पीप, माँस, विष्ठा आदि पाया जाता है।
5. नारकी अपृथक् विक्रिया ही करते हैं अर्थात् स्वयं अपने शरीर को ही अस्त्र-शस्त्र बनाते हैं।
6. नारकियों के शरीर के टुकड़े-टुकड़े होने पर भी उनका अकाल मरण नहीं होता है। उनका शरीर पुनः जुड़ जाता है।
7. इनके शरीर में निगोदिया जीव नहीं रहते हैं।
8. इनका नपुंसक वेद होता है एवं दाढ़ी मूँछें नहीं होती हैं।

6. सात भूमियों में कितने बिल (नरक) हैं ?

84 लाख बिल हैं। रत्नप्रभा में 30 लाख, शर्कराप्रभा में 25 लाख, बालुकाप्रभा में 15 लाख, पङ्कप्रभा में 10 लाख, धूमप्रभा में 3 लाख, तमः प्रभा में 5 कम 1 लाख एवं महातमःप्रभा में मात्र 5 बिल हैं। नारकियों

के रहने के स्थान को बिल कहते हैं। (तत्त्वार्थसूत्र, 3/2)

7. सात भूमियों के अपर नाम कौन-कौन से हैं ?

धम्मा, वंशा, मेघा, अञ्जना, अरिष्टा, मघवी और माघवी। (ति. प., 1/153)

8. सात भूमियों में कितने-कितने पटल हैं ?

प्रथम भूमि में 13, फिर आगे-आगे क्रमशः 11, 9, 7, 5, 3 और 1 पटल हैं।

9. नरकों की मिट्टी कैसी होती है एवं उस मिट्टी की गन्ध यहाँ पर आ जाए तो क्या होगा ?

सुअर, कुत्ता, बकरी, हाथी, भैंस आदि के सड़े हुए शरीर की गन्ध से अनन्त गुणी दुर्गन्ध वाली मिट्टी नरकों में होती है। प्रथम पृथ्वी की मिट्टी की दुर्गन्ध से यहाँ पर एक कोस के भीतर स्थित जीव मर सकते हैं। इसके आगे द्वितीयादि पृथिवियों में इसकी घातक शक्ति आधा-आधा कोस और भी बढ़ जाती है। (ति. प., 2/347-349)

10. इन पृथिवियों में रहने वाले नारकियों की आयु कितनी होती है ?

उत्कृष्ट आयु क्रमशः प्रथम पृथ्वी से 1, 3, 7, 10, 17, 22 एवं 33 सागर एवं जघन्य आयु क्रमशः 10,000 वर्ष, 1, 3, 7, 10, 17 और 22 सागर होती है।

11. नारकियों की उत्कृष्ट एवं जघन्य अवगाहना कितनी है ?

उत्कृष्ट अवगाहना	जघन्य अवगाहना
7 धनुष, 3 हाथ, 6 अङ्गुल	3 हाथ
15 धनुष, 2 हाथ, 12 अङ्गुल	8 धनुष, 2 हाथ, 2-2/11 अङ्गुल
31 धनुष, 1 हाथ	17 धनुष, 1 हाथ, 10-2/3 अङ्गुल
62 धनुष, 2 हाथ	35 धनुष, 2 हाथ, 20-4/7 अङ्गुल
125 धनुष	75 धनुष
250 धनुष	166 धनुष, 2 हाथ, 16 अङ्गुल
500 धनुष	500 धनुष

(मूलाचार, 1057-1063)

12. नरकों में कितने प्रकार के दुःख हैं ?

नरकों में अनेक प्रकार के दुःख होते हैं। जिनमें कुछ प्रमुख हैं-

1. **क्षेत्र सम्बन्धी दुःख** - बिलों में गहन अंधकार रहता है, दुर्गन्ध युक्त मिट्टी रहती है, छाया चाहते हैं[1] पर सेमर के वृक्ष मिलते हैं, वे छाया तो नहीं देते, किन्तु नारकियों के ऊपर छुरी, कांटे के समान वह पत्र (पत्ता) गिराते हैं। प्रथम पृथ्वी से पाँचवीं पृथ्वी के 3/4 भाग तक अत्यन्त उष्ण एवं चतुर्थ भाग में शीत, छठी पृथ्वी में भी शीत एवं सप्तम पृथ्वी में महाशीत रहती है। (ति.प.,2/29-30,34-36)
2. **मानसिक दुःख**-''हाय-हाय! पापकर्म के उदय से हम इस भयानक नरक में पड़े हैं।'' ऐसा विचारते हुए पश्चात्ताप करते हैं। हमने सत्पुरुषों व वीतरागी साधुओं के कल्याणकारी उपदेशों का

1. शरण के लिए असिपत्र वन में प्रवेश करते हैं। (वसुनंदि श्रावकाचार,156)

तिरस्कार किया था। विषयान्ध होकर मैंने पाँच पाप किए थे। जिनको मैंने सताया था, वे यहाँ मुझको मारने के लिए तैयार हैं। अब मैं किसकी शरण में जाऊँ। यह दु:ख अब मैं कैसे सहूँगा। जिनके लिए पाप किए थे, वे कुटुम्बीजन अब क्यों आकर मेरी सहायता नहीं करते। इस संसार में धर्म के अतिरिक्त अन्य कोई सहायक नहीं। इस प्रकार निरन्तर अपने पूर्वकृत पापों का पश्चात्ताप करते रहते हैं। (ज्ञानार्णव, 36/33,59)

3. **शारीरिक दु:ख** –नारकियों का उपपाद जन्म होता है। उपपाद स्थान नीचे की भूमि पर नहीं है, ऊपर के भाग में ऊँटादि के मुख की तरह हैं। वहाँ जन्म लेकर अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्तियाँ पूर्ण कर उपपाद स्थान से च्युत हो, उल्टे नरक भूमि में 36 आयुधों (तलवार, बर्छी आदि) के मध्य गिरकर प्रथम पृथ्वी वाले 7 योजन 3 $^{1}/_{4}$ कोस अर्थात् 31$^{1}/_{4}$ कोस ऊपर उछलते हैं, आगे की भूमियों में दूने-दूने उछलते हैं। अर्थात् 62 $^{1}/_{2}$ कोस, 125 कोस, 250 कोस, 500 कोस, 1000 कोस एवं 2000 कोस उछलते हैं। 1 योजन में 4 कोस होते हैं। (त्रिलोकसार, 182)
4. **असुरकृत दु:ख** – तृतीय पृथ्वी तक असुरकुमार जाति के देव वहाँ के नारकियों को उनके पूर्वभव के वैर का स्मरण कराकर परस्पर में लड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। जैसे-यहाँ मनुष्य मेढ़े, भैंसे आदि को लड़ाते हैं, वैसे ही अम्बरीष आदि कुछ ही प्रकार के असुरकुमार देव नरकों में जाकर लड़ाते हैं और स्वयं भी मारते हैं। (ति.प., 2/353)
5. **परस्परकृत दु:ख** – नारकी कभी शांति से नहीं बैठ सकते न दूसरे को बैठने देते हैं। वे दूसरे नारकी को देखते ही मारते हैं, उसके हजारों टुकड़े कर उबलते हुए तेल के कढ़ाव में फेंक देते हैं तो कभी तप्त लोहे की पुतलियों से आलिङ्गन कराते हैं और कैसे-कैसे दु:ख देते हैं, उसे तो केवली भगवान् भी नहीं कह सकते हैं। (ति.प., 2/318-327,341-345)
6. **रोग सम्बन्धी दु:ख** – दुस्सह तथा निष्प्रतिकार जितने भी रोग इस संसार में हैं, वे सब नारकियों के शरीर के रोम-रोम में होते हैं। (ज्ञानार्णव, 36/20)
7. **भूख-प्यास सम्बन्धी दु:ख** – नारकियों को भूख इतनी लगती है कि तीन लोक का अनाज खा लें तो भी भूख न मिटे तथा प्यास इतनी लगती है कि सारे समुद्रों का पानी पी लें तो भी प्यास न बुझे। (ज्ञानार्णव, 36/77-78) किन्तु वे वहाँ की दुर्गन्धित मिट्टी खाते हैं एवं अत्यंत तीक्ष्ण खारा व गरम वैतरणी नदी का जल पीते हैं।

13. एक जीव नरकों में लगातार कितनी बार जा सकता है ?

प्रथम पृथ्वी से क्रमश: सप्तम पृथ्वी तक 8, 7, 6, 5, 4, 3 एवं 2 बार तक लगातार जा सकता है।

विशेष – नारकी मरण कर पुन: नारकी नहीं बनता है, अत: एक भव बीच में मनुष्य या तिर्यञ्च का लेकर पुन: नरक जा सकता है। (त्रिलोकसार, 205)

14. नाना जीव की अपेक्षा नरक में उत्पन्न होने का अंतर कितना है ?

प्रथम पृथ्वी से क्रमश: सप्तम पृथ्वी तक, यदि कोई भी जीव उत्पन्न न हो तो उत्कृष्टतया 48 घड़ी (19 घंटे 12 मिनट) एक सप्ताह, एक पक्ष, एक माह, दो माह, चार माह एवं छ: माह का अन्तर हो सकता है। (त्रिलोकसार, 206)

15. नारकियों का अवधिज्ञान क्षेत्र कितना है ?

नाम	ऊपर	तिर्यक्	नीचे
रत्नप्रभा	सर्वत्र अपने बिल	सर्वत्र असंख्यात	4 कोस तक
शर्कराप्रभा के	शिखर तक	कोड़ा कोड़ी योजन	3.5 कोस तक
बालुकाप्रभा	,,	,,	3 कोस तक
पङ्कप्रभा	,,	,,	2.5 कोस तक
धूमप्रभा	,,	,,	2 कोस तक
तमःप्रभा	,,	,,	1.5 कोस तक
महातमःप्रभा	,,	,,	1 कोस तक

गणना – 1 कोस = 2000 धनुष । 1 धनुष = 4 हाथ । 1 हाथ = 24 अङ्गुल । (त्रिलोकसार, 202)

अभ्यास

सही या गलत बताइए –

1. नारकी अपृथक् विक्रिया नहीं करते हैं।
2. नरक की मिट्टी दुर्गन्धित होती है।
3. सप्तम पृथ्वी के नारकी की जघन्य ऊँचाई 500 धनुष नहीं है।
4. धम्मा नरक के नारकी की अवगाहना 3/4 धनुष जघन्य है।

अन्यत्र खोजिए –

1. आयुध रूप विक्रिया कौन-सी पृथ्वी तक के नारकी करते हैं ?
2. सप्तम पृथ्वी के नारकी किस प्रकार की विक्रिया करते हैं ?
3. मरण होने पर नारकियों के शरीर का क्या होता है ?
4. त्रिलोकसार ग्रन्थ के अनुसार नरक की दुर्गन्धित मिट्टी से मनुष्य क्षेत्र के कितने कोस के व्यक्तियों को मारने की क्षमता है ?
5. एक शरीर में अधिकतम कितने रोग हो सकते हैं ?

विदेह क्षेत्रस्थ बीस तीर्थङ्करों के नाम

1. श्री सीमन्धरजी 2. श्री युगमन्धरजी 3. श्री बाहुजी 4. श्री सुबाहुजी 5. श्री सुजातजी 6. श्री स्वयंप्रभजी 7. श्री ऋषभाननजी 8. श्री अनन्तवीर्यजी 9. श्री सूर्यप्रभजी 10. श्री विशालकीर्तिजी 11.श्री वज्रधरजी 12. श्री चन्द्राननजी 13. श्री भद्रबाहुजी 14. श्री भुजंगमजी 15. श्री ईश्वरजी 16. श्री नेमप्रभजी 17. श्री वीरसेनजी 18. श्री महाभद्रजी 19. श्री देवयशजी 20. श्री अजितवीर्यजी